जरूरी है। सैम्पल लेने के लिये साफ पानी में लाल दवाई मिलाकर पानी को हल्का गुलाबी बना लें। इस पानी से थनों को अच्छी तरह से धो लें। एक साफ धुला हुआ तौलिया या अगोंछा लेकर थनों व आंचल को अच्छी तरह पौंछ ले। अब एक डिस्पोज़ेबल सिरींज लेकर उसकी सुई को मोड़ दें तथा पीछे से पिस्टन खींचकर बाहर निकाल लें। पिस्टन को पकड़ने की जगह के अलावा किसी और भाग को न छुएं। अब थन से एक धार किसी अन्य बरतन में निकाल दें तथा दूसरी धार सीधे सिरिंज में मारें। इसके बाद पिस्टन को वापिस सिरींज पर लगाकर थोड़ा दबा दें। सिरींज के बाहर लगे दूध को सूखे कपड़े से पोंछ दे। इस प्रकार पहले जो थन ठीक लग रहे हैं उनसे दूध निकालें तथा अंत में खराब थन से दूध निकालें। चारों सिरींज पर टेप लगाकर नम्बर लिख दें। अब इन सैम्पलों को किसी गत्ते के डिब्बे आदि में डालकर धूल, मिट्टी व धूप से बचाकर प्रयोगशाला पहुंचा दें।

जांच की रिपोर्ट आने पर कुशल पशु चिकित्सक से ही ईलाज करवायें।

मुख्य सम्पादक :

डॉ॰ एल॰ सी॰ रंगा, पी॰ एच॰ डी॰
महानिदेशक

सम्पादक :

डॉ॰ सुखदेव राठी, उपनिदेशक
डॉ॰ नरेन्द्र ठकराल, पशु चिकित्सक

पशुपालन से सम्बंधित अन्य पुस्तकें Download करने के लिए QR Code Scan करें

पशुपालन एवं डेयरी विभाग, हरियाणा

बेज नं. 9–12, सैक्टर –2, पंचकुला, हरियाणा
फोन : 0172–2574663–64
ईमेल : dg.ahd@nic.in

दुधारू पशुओं के थनों का रोग

थनैला

पशुपालक भाईयों,

पशुपालन व्यवसाय को लाभदायक धन्धे के रूप में चलाने के लिये जरूरी है कि आपका पशु स्वस्थ रहे, समय पर ब्याए और स्वच्छ दूध का उत्पादन करे। लेकिन स्वच्छ दूध के उत्पादन में थनैला एक बड़ी बाधा के रूप में उभर रहा है।

थनैला थनों का एक संक्रामक रोग है जो आमतौर पर जानवरों को गन्दे, गीले और कीचड़ भरे स्थान पर रखने से होता है। गाय भैंस को दुहने के बाद उसके थनों के छिद्र लगभग आधे घण्टे तक खुले रहते हैं। इस दौरान बीमारी पैदा करने वाले रोगाणु थनों में प्रवेश कर जाते हैं तथा थनों में रोग उत्पन्न कर देते हैं। थन में चोट लगने से, दूध पीते समय बछड़े का दांत लगने से, गलत तरीके से दूध दुहने से तथा पशु की रोग प्रतिरोधक क्षमता क्षीण होने पर इस रोग की सम्भावना बढ़ती है। यह रोग ज्यादा दूध देने वाली गाय व भैंसों में अधिक होता है।

थनैला रोग होने पर पशु के थन तथा आंचल में सूजन तथा दर्द महसूस होता है तथा थन सख्त हो जाता है। प्रभावित थन में दूध कम होने लगता है तथा दूध का स्वाद बदल जाता है। दूध में छिछड़े, खून या मवाद आने लगता है। कभी कभी दूध पानी की तरह पतला हो जाता है। समय पर उपचार नहीं मिलने पर थन सिकुड़ जाता है तथा आंचल भी टेढ़ा हो जाता है। प्रभावित थन में दूध उत्पादन बहुत कम हो जाता है या बिलकुल बंद हो जाता है। लेकिन कई बाद दूध उत्पादन में कमी को छोड़कर और कोई भी लक्षण प्रकट नहीं होते।

इस बीमारी से बचाव का टीका उपलब्ध न होने के कारण रोकथाम के अन्य उपायों पर समुचित ध्यान देना पड़ता है। अगर हम नीचे दी गई कुछ छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखें तो अपने पशुओं को इस रोग से बचा सकते हैं।

- पशु बाड़े के फर्श को सूखा रखें।
- गोबर एवं मूत्र के निपटान की समुचित व्यवस्था रखें।
- मक्खियों एवं मच्छरों के नियंत्रण के लिये समय -समय पर कीटनाशक दवा का छिड़काव करें।
- दूध दुहने से पहले अपने हाथ साबुन से अच्छी तरह धो लें।
- पशु को दुहने से पहले तथा बाद में थनों को लाल दवाई से अच्छी तरह धोएं।
- दूध जल्दी तथा एक बार में ही दूहें।
- स्वस्थ पशु को पहले तथा बीमार पशु को अंत में दूहें।
- इसी प्रकार स्वस्थ थनों से दूध पहले निकाले तथा रोग ग्रस्त थन का दूध अंत में निकालें।
- दूध दूहने के बाद पशु को चारा डाल दें ताकि पशु कम से कम आधा घण्टा खड़ा रहे।

पशु के दूध उत्पादन में असामान्य कमी आने या थनैला के किसी अन्य लक्षण के प्रकट होने पर तुरंत दूध की जांच करवायें तथा अपने पशु चिकित्सक की सलाह लें। दूध की जांच जिला रोग निदान प्रयोगशाला में बिल्कुल मुफ्त की जाती है।

दूध की सही प्रकार से जांच करवाने के लिये दूध का सैम्पल ठीक प्रकार से लेना बहुत